मैथिली (100)
कक्षा - 12

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 10-07-24

प्रकरण - बाल - लीला

कय बेरि आगि हाथसँ छीनु
कय बेरि पकला तकला बीनु
कय बेरि साप धरम पुनि जाथि
कय बेरि चून दही बदि खाथि

कविक कहब छनि जे बच्चा सभकेँ ज्ञानक अभाव होइत छैक जाहि कारणेँ आँगनसँ बहार भ' चूनकेँ दही बुझि खायब, आगिकेँ उत्सुकतावश हाथसँ पकड़ैत छथि, बालसुलभ सापकेँ सेहो पकड़ैत छथि। एही तरहेँ बच्चासभ काज करैत रहैत छथि।

कवि मनबोधक भाषा सरल ओ बोधगम्य अछि। संस्कृतक तत्सम शब्दक स्थानपर विशुद्ध गमैया भाषाक प्रयोग क' कृष्णचरितकेँ सर्वसुलभ बनयबाक प्रयास कयलनि। दोहा-चौपाइक शैलीमे सम्पूर्ण कृष्णलीलाकेँ वर्णन कयलनि। रस - अलंकार छोड़ि सरल भाषाक प्रयोगमे कतहु - कतहु गमईया भाषाक प्रयोग सेहो कैने छथि। जेना- विरतान्त, बिच्छ।